RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

AI के सामाजिक परिणाम और चुनौतियां

रामकिशोर, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) राजकीय महाविद्यालय, धरियावद (प्रतापगढ़)

भारतीय संस्कृति और समाज

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन और गौरवशाली संस्कृति रही है, भारतीय संस्कृति में विविधता के साथ एकता, उदारता,सहिष्णुता, सभी धर्मो–सम्प्रदायों के साथ सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व और समस्त मानव जाति के कल्याण जैसी विशेषताएँ इसे विश्व की अन्य संस्कृतियों से अलग करती हैं इसी के साथ भारतीय संस्कृति प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं और परम्पराओं के साथ–साथ नवीनता को भी अपनाती रही है। विश्व की कई प्राचीन संस्कृतियाँ समाप्त हो चुकी हैं वहीं भारतीय संस्कृति गम्भीर राजनीतिक उथल पुथल को सहकर भी आज तक जीवित है। भारतीय संस्कृति का शांति, अहिंसा और विश्व बंधुत्व का आदर्श आज युद्व की विभीषका से त्रस्त मानव के लिए आशा की एक किरण है।

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता और निरन्तरता – भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन और गौरवशाली संस्कृति रही है। भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रागैतिहासिक काल से शुरू होकर बदलाव के साथ आज नए रूप में अपने आप को स्थापित कर लिया है तथा इसका स्वरूप निरन्तर बदलता रहा है और नवीनता को अपनाती रही है। सर्वप्रथम प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ यथा पाषाण, पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण संस्कृति के रूप में सामने आयी उसके बाद सिन्धु–सरस्वती, ताम्रपाषाण, वैदिक सभ्यता, छठि शताब्दी में जैन व बौद्व संस्कृति से होते हुए आधुनिक काल में भक्ति आन्दोलन के रूप में विद्यमान रही है। विश्व की अनेक संस्कृतियां लुप्त हो गयी हैं वही भारतीय संस्कृति की धारा निर्बाध रूप से 5000 वर्षो से अधिक समय से बहती चली आ रही है।

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता– भारतीय संस्कृति में शरीर की अपेक्षा आत्मा को अमर व सर्वव्यापक माना गया है। भारतीय संस्कृति त्यागपरक है। सब प्राणियों के भलाई की कामना करना (सर्वे भवन्तु सुखिनः) इस संस्कृति का मूल मंत्र हैं। भारतीय संस्कृति में। मानव जीवन के लिए चार पुरूषार्थ माने गए हैं – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । इसमें मोक्ष अन्तिम लक्ष्य है और अन्य तीन पुरूषार्थो में कर्म की प्रधानता है।महाभारत का कथन है– ''जीवन में अर्थ और काम का इस प्रकार सेवन करो कि धर्म का उल्लंघन न हो''। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक पक्षों के बीच समन्वय मिलता है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में विचार स्वतन्त्रता और सहनशीलता – भारतीय संस्कृति में चिन्तन की स्वतन्त्रता को पूर्ण मान्यता दी गई है। यहाँ अनेक प्रकार कें आस्तिक और नास्तिक दर्शनों का विकास हुआ। षड्दर्शन एवं बौद्व, जैन, चार्वाक, भागवत, शैव आदि विभिन्न मतों की यहाँ सृष्टि हुई, परन्तु सभी धर्मो व मतों के प्रति सहनशीलता की भावना भारतीय जीवन में ओत प्रोत रहीं है।सम्राट अशोक के बारहवें शिलालेख में अशोक ने कहा है–'' मनुष्यों को दुसरों के धर्म को सुनना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। जो मनुष्य अपने धर्म को पूजता है और दुसरे धर्म की निंदा करता है, वह ऐसा करते हुए अपने धर्म को बड़ी हानि पहुँचाता है''। अशोक की धर्मसहिष्णुता का यह आदर्श आज भी हमारा मार्गदर्शन करता है।

भारतीय संस्कृति की समन्वय शक्ति – बाहरी तत्वो को अपने में समाहित करने की क्षमता और समयानूकुल परिवर्तन भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण गुण है। भारतीय संस्कृति इतने लम्बे समय से जीवित और सक्रिय है इसका प्रमुख कारण इसकी समन्वय शक्ति है। जो इसे व्यापकता प्रदान करती है। भारत में समय–समय पर अनेक विदेशी आक्रमणकारी आए और उन्होने यहाँ राजनीतिक प्रभुत्व भी स्थापित किया। तथापि भारत ने इन विदेशियों पर सांस्कृतिक विजय प्राप्त की और उन्हे हमेशा के लिए अपनी ही गोद में समा लिया। भारतीय संस्कृति की समन्वय शक्ति के बारे में प्रो. डॉडवेल का यह कथन सत्य है कि '' भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन होती रही है''।आज विश्व में अनेक प्रकार की विचारधाराओं, आदर्शो तथा संस्कृतियों का संघर्ष चल रहा है। इनके सफल समन्वय द्वारा ही एक विश्व समाज का निर्माण किया जा सकता है।

भारतीय समाज व संस्कृति के मूल आधार – भारतीय संस्कृति के मूल आधार जो न केवल आध्यात्मिक बल्कि भौतिक जीवन का समन्वय कर एक सुनियोजित सुव्यवस्थित सामाजिक–जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। परम्परागत भारतीय जीवन प्रणाली को सुव्यवस्थित करने में 'पुरूषार्थ' का अत्यधिक महत्वपूर्ण

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

स्थान रहा हैं। व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को उसके प्रमुख कर्तव्यों को विभाजित कर चार पुरूषार्थ– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के माध्यम से सुव्यवस्थित किया गया है।

संस्कार – भारतीय सामाजिक अवस्था में व्यक्ति को सामाजिक–धार्मिक व्यक्ति बनाने, उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने के लिए व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक परिष्कार और शुद्विकरण अनिवार्य माना गया है, इसी शुद्विकरण की पद्वति को संस्कार कहा गया है। भारतीय संस्कृति में प्रमुख रूप से 16 संस्कार माने गए है– गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, विधारंभ, कर्णवेध, यज्ञोयवीत, वेदारंभ, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि संस्कार।

वर्ण व्यवस्था – भारतीय समाज एवं संस्कृति में व्यक्तियों के सामाजिक जीवन को प्रकार्यात्मक रूप से उपयोगी बनाने और उसे स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से वर्ण व्यवस्था अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज कों चार वर्णो– ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र में विभाजित किया गया है। प्रत्येक वर्ण के दायित्व (भूमिका), अधिकार, कार्य एवं व्यवसाय निर्धारित किए गए है।

आश्रम व्यवस्था– भारतीय समाज में आश्रम व्यवस्था जीवन के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति के विभिन्न कर्तव्यों को निर्धारित करके उसके व्यक्तित्व को सुव्यवस्थित करने का प्रयास करती है।भारतीय समाज में आश्रम व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति की आयु 100 वर्ष मानकर उसे 25–25 वर्षो के चार भागों में विभाजित किया गया है, ये चार आश्रम है– ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम इन्ही आश्रमों के माध्यम से व्यक्ति चार पुरूषार्थो को प्राप्त करता है।

ऋण और महायज्ञ – भारतीय जीवन पद्वति मे प्रमुखताः से पाँच ऋण माने गए है– देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण, अतिथि ऋण एवं भूत ऋण। व्यक्ति आज जो कुछ भी है जिस अवस्था में हें उसके लिए वह दूसरों का ऋणी है, यह देवताओं, ऋषियों, माता–पिता, अतिथियों तथा पशु–पक्षियों तक का ऋणी है। अतः इनके प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करके वह इन ऋणो से मुक्त हो सकता है। इसके लिए पाँच महायज्ञो की व्यवस्था की गई है।

भारतीय समाज व संस्कृति का बदलता स्वरूप – वैज्ञानिक अनुसंधान और सामाजिक बदलाव – सामाजिक सांस्कृतिक बदलाव लाने में वैज्ञानिक अनुसंधानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। नए अनुसंधान जहाँ एक और परम्परागत संस्कृति में निष्ठा को मजबूती प्रदान करते है वहीं दूसरी और परम्पराओं, रीति रिवाजों धार्मिक–सांस्कृतिक क्रियाकलापों की वैधानिक पुष्टि भी करता है। हजारों वर्षो से योग, आयुर्वेद, शल्यचिकित्सा जैसी पद्वतियां मानव जीवन को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं थी आज उन्ही पद्वतियों को वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से सत्यता की पुष्टि की गयी। इसी के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से भारतीय समाज व संस्कृति में विद्यमान कुप्रथाओं, अंधविश्वासो का खण्डन कर इसे विशुद्व बनाने का प्रयास किया गया है।

तकनीक का विकास और सामाजिक बदलाव – विकासशील देशों में जहाँ शिक्षा का प्रतिशत बहुत कम है, वहाँ तकनीकी विकास ने सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। तकनीकी विकास में सर्वप्रथम व प्रमुख रूप से जनसंचार की व्यवस्था ने सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जनसंचार का अर्थ है सूचना, विचारों और मनोरंजन का संचार माध्यमों द्वारा व्यापक प्रसार। इनमें ऐसे माध्यम भी शामिल है जो जन संचार के आधुनिक साधनों का उपयोग करते है, जैसे रेड़ियों, टेलीविजन, सिनेमा, समाचार पत्र, अन्य प्रकाशक। जनसंचार के माध्यमों ने सामाजिक जीवन को सहज सरल बनाने और एक वैश्विक व्यापक द्वष्टिकोण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तकनीकी विकास के क्रम में और सामाजिक बदलाव में अब सबसे अधिक कोई प्रभावित कर रहा है वह AI (कृत्रिम बुद्विमता) है जिसने मानों सामाजिक जीवन में एक क्रान्ति ला दी हो।

AI का परिचय –

21 वीं सदी का सबसे प्रमुख अविष्कार कृत्रिम बुद्विमता (AI) है जो कम्प्यूटर/रोबोटिक्स की एक शाखा के रूप में मानव की तरह सोचने, समझने, समस्या का हल करने और मानव की तरह व्यवहार करने पर आधारित हैं। AI की शुरूआत 1950 के दशक में हुई थी। AI का सामान्य अर्थ है कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्विक क्षमता। इसके माध्यम से कम्प्यूटर या रोबोट सिस्टम तैयार किया जाता है जिसे उन्ही तर्को के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

करता है। वैश्विक परिद्वश्य में देखा जाए तो AI आज एक विश्व महाशक्ति के रूप में उभर रही हैं अर्थात जिस देश के पास AI तकनीक होगी वह देश उतना ही शक्तिशाली होगा । अब देशो के बीच प्रतिस्पर्धा भी AI को लेकर होगी। इस संदर्भ में रूस के राष्ट्रपति पुतिन कहते है– ''AI भविष्य है और जो AI में नेता बनेगा वहीं दुनिया का शासक बनेगा।'' चीन के राष्ट्रपति शी शिनपिंग के अनुसार – चीन 2030 तक AI में विश्व का नेता बनना चाहता है अमेरिका पहले ही घोषणा कर चुका है कि ''अमेरिका AI में वैश्विक नेता रहा है । भारत के नीति आयोग द्वारा प्रकाशित AI की राष्ट्रीय रणनीति में ''AI-for-All'' सबसे महत्वपूर्ण द्वष्टिकोण है। विभिन्न देशो की कम्पनियों ने अपने AI मॉडमूल लाँच कर दिए है और इनमें आपस में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा देखने को मिल रही है। जैसे – अमरिका ने open AI, chat GPT, Alexa, चीन का Deepseek इत्यादि। इन AI मॉड्यूल से मानव समाज में आमूल चूल परिवर्तन आया है, AI तकनीक इतनी तेज गति से विकास कर रही है की आम आदमी सोच भी नहीं सकता। बढ़ते विकास के साथ AI मानव के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित कर रहा है। मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक यहाँ तक की मानव के व्यक्तिगत जीवन को भी बहुत ही गहरे रूप में प्रभावित कर रहा है। AI अब दिन प्रतिदिन की जरूरतों में एक सहयोगी की तरह मानव के जीवन में शामिल हो गया है, और धीरे–धीरे AI मनुष्य को अपने नियन्त्रण में भी ले रहा है। एक ओर AI मानव जीवन को सरल सहज बनाने और मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है मानव के रोजमर्रा के जीवन को आसान बना रहा है दूसरी और AI के उपयोग को लेकर विभिन्न देशों में गम्भीर चिन्ता भी है क्योकि इससे कई तरह के नुकसान यथा साइबर अपराध, डाटा चोरी जैसी कई गम्भीर समस्याएँ भी है।

सकारात्मक रूप में AI के सामाजिक प्रभाव व परिणाम –

AI स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वरदान– स्वास्थ्य देखभाल और मेडिकल क्षेत्र मे AI ने एक क्रान्ति के रूप में कार्य किया है। AI हमारे डॉक्टरों के लिए विश्वसनीय आँखो की दूसरी जोड़ी के रूप में कार्य कर सकता है और यह बेहतर डॉक्टरों को बेहतरीन बना सकता है। AI के उपयोग द्वारा किसी भी असामान्य लक्षण दिखाई देने से पहले ही हमारे स्वास्थ्य के बारे में सब कुछ अनुमान लगाना संभव हो जाएगा। इस तरह से प्राप्त हुई प्रारम्भिक पूर्व चेतावनी के अनुसार हम रोगों को रोकने या ठीक करने या कई बिमारियों को प्रारम्भिक अवस्था में ही पता लगाने में सक्षम हो सकेगें। AI के उपयोग द्वारा बीमारीयों का जल्दी से पता लगाने या व्यक्तिगत तौर पर उपचार की योजना बनाने के साथ ही दवा की खोज और निदान जैसी प्रकियाओं को स्वचालित कर पाएगें। इससे स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी को ट्रेस किया जा सकता है। जिससे लागत भी कम आएगी और सुरक्षा व विश्वसनीयता को भी बढ़ावा मिलेगा। AI के माध्यम से कैंसर, एड्स, टीबी, जैसी गम्भीर बिमारियों का निदान भी आसान हो पाएगा। उदाहरण के तौर पर AI के द्वारा घुटनों की उपास्थि के अन्दर पानी के प्रसार का पता लगाकर लक्षणों के आगमन से 3 साल पहले ही 85% से अधिक सटिकता के साथ ऑस्टियोआर्थराइटिस रोग की प्रगति का पता लगा सकता है। टीबी का पता लगाने के लिए AI तकनीक सबसे कुशल साबित हुई है। इसी तरह AI-एडेड मैमोग्राफी स्तन कैंसर का उस स्थिति में भी पता लगाने में असाधारण रूप से कुशल है। ये तकनीके डॉक्टरों के लिए नैदानिक निर्णय प्रक्रियाओं जैसे कि रोग का पता लगाने, घाव विभाजन, निदान, उपचार चयन, प्रतिक्रिया मूल्यांकन, क्लीनिकल प्रेडिक्शन इत्यादि को प्रभावित करती है। स्वास्थ्य सेवाओं सम्बन्धित AI टूल्स – Personal AI Analyst, Healthcare Bots, Assisting Doctors, Physical Displacement.

AI की शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति – AI के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है। AI का उपयोग शिक्षको द्वारा काफी समय से प्लानिंग ग्रेडिंग में किया जा रहा है। अब AI के माध्यम से स्कूल, कॉलेज, संस्थाओं का पर्सनलाइज डाटा तैयार करना, विद्यार्थियों का रिपोर्ट कार्ड तैयार करना जिससे बच्चे की सम्पूर्ण शिक्षा यात्रा को ट्रेस किया जा सकता है जो बच्चो के सीखनें, समझने सम्बन्धी क्षमता व कमजोरियों कों पहचान सके और विद्यार्थियों की क्षमता, कमजोरियों, परिस्थितियों, योग्यताओं के आधार

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

पर कॉर्स डिजाइन करने में भी मददगार है। AI के द्वारा शिक्षा प्राप्त करना सहज, सरल, हो गया है जो योग्यतानुसार व न्यूनतम लागत में प्राप्त हो जाती है। इसी के साथ रोबोट टिचर की अवधारणा को भी स्वीकारा जा रहा है। हाल ही में मैकर लैब्स एडुटेक नई दिल्ली द्वारा भारत के केरल में AI रोबोट शिक्षक लॉन्च किया गया जिसका नाम–''आइरिस'' है, जो जनरेटिव AI और अत्याधुनिक रोबोटिक्स तकनीक द्वारा संचालित है। आइरिस तीन भाषाओं को समझता है और इसे एड्रॉयड ऐप के द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है। इसी के साथ शोध क्षेत्र में ओपन AI का डीप रिसर्च टूल जो बहूत ही कम समय में जटिल से जटिल शोध भी कर सकता है। ये टूल इन्टरनेट से जानकारी प्राप्त कर उसके माध्यम से एक रिपोर्ट तैयार करता है जो एक रिसर्च एक्सपर्ट द्वारा तैयार रिपोर्ट की तरह होती है। AI के माध्मय से नए आइडियाज, कटेन्ट लिखना, ऑनलाइन कैप्सन लिखना, गुणवता सुधारना जैसे अनेक कार्यों के साथ सामान्य कार्य जो बहुत ज्यादा महंगे व समय खराब करने वाले हो उन्हे आसानी से व न्यूनतम किमत में प्राप्त किया जा सकता है और गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष, कम्प्यूटर जैसे जटिल विषयों को सीखने, समझने में भी AI बेहद मददगार साबित हो सकता है। शिक्षा के क्षेत्र मे उपयोगी टूल्स – Grading, AI tutor Grammar Correction APP, Smart lata Gathering, Alter the Role of Teacher.

AI का कृषि क्षेत्र में उपयोग – भारत शुरू से ही कृषि प्रधान देश रहा है, कृषि क्षेत्र में जितना सुधार होगा उतना ही देश धन–धान्य–पोषण से समृद्व होगा। कृषि क्षेत्र को उन्नत करने हेतु भारत सरकार ने किसान की आय दोगुना करने को राष्ट्रीय ऐजेन्ड के रूप में प्राथमिकता दी है। इसी के साथ कृषि क्षेत्र में नयी तकनीकी प्रयोग से कृषि क्षेत्र उन्नत हो पायेगा। AI के प्रयोग से कृषि क्षेत्र भी अछूता नही है वर्ष 2016 में लगभग 50 भारतीय कृषि प्रोद्योगिकी आधारित स्टार्टअप्स के समूह AgTechs ने 313 मिलियन डॉलर का निवेश जुटाया। भारतीय स्टार्टअप Intello labs. फसलों की निगरानी करने और खेत की पैदावार की भविष्यवाणी करने कि लिए एक इमेज रिकोगनाइज सॉ¶टवेयर का उपयोग करता है। Aibono नामक स्टार्टअप फसल की पैदावार को स्थिर करने लिए समाधान प्रदान करने के लिए कृषि डेटा विज्ञान और AI का उपयोग करता है। Blue River Technologies ने कम्प्यूटर विजन और मशीन लर्निग तकनीकों के डिजाइन और एकीकृत करके किसानों को खरपतवारनाशक के छिड़काव को न्यूनतम करने के लिए केवल उन्ही क्षेत्रो में छिड़काव करने में सक्षम बनाया है जहाँ खरपतवार मौजूद होते है। नीति आयोग और IBM ने किसानों को रियल–टाइम–एडवाइजरी देने के लिए AI का उपयोग करके एक crop Yield prediction model विकसित करने के लिए भागीदारी की है। यह परियोजना आसाम, बिहार, झारखण्ड़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उÙारप्रदेश के 10 महत्वकांक्षी जिलों में कार्यान्वित की जा रही हैं।

AI रोजगार के नए अवसर सृजन में सहायक – AI तकनीक आने से प्रत्येक क्षेत्र में ऑटोमेशन (स्वचालितता) आ जाएगा जिससे कई परम्परागत व्यवसाय, रोजगार सामाप्ति के कगार पर पहूँच गए परन्तु इसके साथ AI अपने साथ रोजगार के नए अवसर भी प्रदान करता है। जिसमें तकनीकी ज्ञान कौशल विकास से नए रोजगार क्षेत्र स्थापित हो सकेगें। AI मौजूदा भूमिकाओं को नया रूप दे रहा है और नए और अप्रत्याशित अवसरों को जन्म दे रहा है। AI अपने आप में रोजगार के रूप में भी भूमिका अदा करता है इसके लिए जरूरी है कि व्यक्ति AI के बारे में लगातार सीखता रहे, इससे दूरिया ंना बनाए। AI के साथ अपडेट रहने से उस व्यक्ति का रोजगार कभी समाप्त नही होगा क्योकि AI भविष्य है और जरूरत भी। इसके साथ AI पर आधारित नए कौशल सीखकर कोडिग, मशीन लर्निग, डाटा विश्लेषण, द्वारा रोजगार के नए रास्ते बनाए जा सकते। AI मशीनी भाषा पर कार्य करता है तो वह कभी भी मानव–स्पर्शी नही हो सकता है। भावनाओं, संवेगो को समझने में मशीनी भाषा सक्षम नही है तो इन पर आधारित रोजगारों का सृजन होगा। तकनीकि विकास इतनी तेज गति से हो रहा है और इसी के साथ मानव अकेलापन का शिकार भी हो रहा हैं। ऐसे संगठनों रोजगारों का सृजन होगा जो मनुष्य के साथ भावनात्मक जुड़ाव रखे उसे भावनात्मक/संवेगात्मक मजबूती प्रदान करे। AI का प्रयोग अब रचनात्मकता में भी बहूत हो रहा है तो गाने, कला, डिजाइन इन में AI का प्रयोग कर नए तरीके से इन्हे

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

प्रस्तुत किया जा सकता है।

AI द्वारा सामाजिक जीवन स्तर में सुधार – AI तकनीक अन्य समस्याओं के समाधान के साथ मानव के जीवन स्तर को सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। AI द्वारा मानव जीवन की लगभग समस्याओं का समाधान आसान हो गया है। उदाहरणार्थ chat Gpt में आप किसी भी समस्या को बताएगें, आसान भाषा में स्टे¶&बाइ–स्टेप उसका समाधान भी बता दिया जाएगा। घरेलू या रोजमर्रा के कार्यो में AI का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है। किसी भी सरकारी/नीजी संस्थाओं में जहाँ मुख्य कार्ये सेवाओं से सम्बन्धित हैं। वहॉ चैट बॉट जरूर मिलता है जो उस संस्था से सम्बन्धित किसी भी कार्य हो या कोई जानकारी प्राप्त करना हो आसान tab में सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। आज चाहे बैंकिग सम्बन्धित कार्य हो, रेल टिकट बुक करना हो, किसी रेस्टोरेन्ट से खाना बुक करना हो या टूर या ट्रेवल करना हो सम्पूर्ण जानकारी आसानी से AI के माध्यम से प्राप्त हो जाती हैं AI के ऐसे ऐसे टूल्स आ गए है जो बताते है आप पर ड्रेस कौनसी अच्छी लगेगी, हेयर स्टाइल कौनसी अच्छी लगेगी या जूते किस टाइप से सभी कुछ AI के माध्यम से सम्भव है। इस प्रकार AI का प्रयोग जिस गति से रोजमर्रा के जीवन में बढ़ा है उसी गति से मनुष्य के जीवन स्तर में सुधार भी आया है और जीवन आसान भी हुआ है। इसी के साथ नेतृत्व व प्रबंधन में भी AI महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिसे AI का ज्ञान होगा, AI आधारित स्किल होगा वही नेतृत्व कर्ता होगा। किसी भी संस्था के प्रबंधन में कर्मचारियों का वर्गीकरण, वेतन, बोनस, कार्य रिपोर्ट आदि सभी AI कें माध्यम से सम्भव हैं।

AI से ऑटोमेशन– AI मानव बुद्वि नही हो सकता पर, मानव बुद्वि से बढ़कर भी बहुत से कार्यों को आसान कर देगा जो मानव के लिए हमेशा मुश्किल भरे या परेशान करने वाले रहे हो। AI द्वारा मशीनें ऑटोमशीन अर्थात स्वचालित मोड में आ जाएगी। कई ऐसे कार्य होंगे जो एक बार प्रोग्रामिंग करने के बाद हमेशा के लिए स्वचालित हो जाएगा। स्मार्ट घरों में स्वचालित तरीकों से विभिन्न कामों को आसानी से निपटाया जा सकता है। एक ऑटोनोमस हॉम सिस्टम में घर की सफाई करने का रोबोट को अलग–अलग कमरों की विभिन्न सतहों के आधार पर सफाई कार्य संचालित करने के लिए स्मार्ट तकनीको, AI का प्रयोग करके अनूकुलित किया जा सकता है। इसी तरह, AI युक्त थर्मोस्टेट सिस्टम द्वारा उपयोगकर्ता घर आने से पहले ही अपने कमरें को गरम या ठण्डा कर सकते है या वाई–फाई एकीकृत थर्मोस्टेट रिमोट कण्ट्रोल द्वारा विभिन्न घरेलू इकाइयों के तापमान को नियन्त्रित कर सकते है। सुरक्षा हेतू फेस रिकोगनिशन, एल्गोरिदम का उपयोग करके AI संचालित प्रणाली, मोशन डिटेक्टर,सेंसर और कैमरों से लैंस सेल्फ मॉनिटरिगं सिक्योरिटी सिस्टम, संभावित घुसपैट का आसानी से आंकलन करेगें और आपात स्थिति में आलार्म भी करेगें। स्वचालित वाहन जिसमें ड्राइवर की आवश्यकता नही। ऐसे वाहन अपने निर्धारित गंतव्य तक पहूँचने के लिए ट्रैफिक जाम और सड़क दुर्घटनाओं से बचते हुए सबसे छोटा, त्वरित, कम लागत वाला और कम ईंधन खर्च करने वाला मार्ग चुनने में सक्षम होगी। इन स्वचालित वाहनों द्वारा आवागमन के लम्बे समय तक की जाने वाली ड्राइविंग के कारण होने वाली थकावट, शारीरिक, तनाव, मानसिक तनाव को बहुत हद तक कम किया जा सकता है।

AI से महिला सशक्तिकरण – Big data और cloud computation की विशेषताओं के साथ आई AI क्रान्ति के साथ महिला रोजगार दर में भारी वृद्वि होने की उम्मीद है। ऐसा इसलिए है क्योकि AI सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दो के कारण महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं को कम करने में सक्षम होगा। cloud computing के कारण महिलाओं को अपना घर से काम करने का मौका मिल पाएगा या वे एक उद्यमी के रूप में भी आगे बढ़ सकती है। साथ ही इनके द्वारा महिलाओं के सामाजिक और सामान्य कौशलों का स्तर बढ़ाया जा सकेगा। इस क्षेत्र में AI ट्यूटर का उपयोग किया जा सकता है जिससे महिलाएँ बुनियादी शिक्षा व कौशल सीख सकती है उन महिलाओं के लिए विशेष उपयोगी जिन्हे घर से बाहर जाने की अनुमति नही या वह खर्च नही उठा सकती। घर के बाहर AI के कारण महिलाएँ सुरक्षित व स्वतन्त्रत अनुभव कर सकती है। ऐसे उपकरण बनाएं जा रहे है जो महिलाओं को किसी भी खतरनाक स्थिति से बाहर निकलने और किसी भी संभावित यौन हमले से बचने में मदद कर सकते है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

AI कौशल विकसित कर महिला रोजगार प्राप्त कर सकेगी जिससे महिला की आर्थिक निर्भरता कम होगी जो महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है। AI का प्रयोग से महिला असमानता, लैगिक असमानता को समाप्त कर पायेगी। महिला सुरक्षा हेतू AI टूल्स 6 safe, safetrek, Hikewise, circle of 6, life 360 safe365.

AI के सामाजिक नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ –

आधुनिक युग में AI मानव समाज का एक हिस्सा हो गया है मानव पूर्णतः तकनीक पर निर्भर है। और 2025 से जन्म लेने वाली पीढ़ी Gen Beta के नाम से जानी जायेगी जो AI युग की पहली पीढ़ी होगी अर्थात अब आने वाला युग ही AI का होगा जिसमें तकनीक और AI का विकास और भी तेज गति से होगा। तकनीक जैसे जैसे बढ़गी इसका प्रभाव क्षेत्र भी बढ़ेगा ऐसी स्थिति में ज्यादा जागरूक होने की आवश्यकता होगी। सामाजिक स्तर पर इसके नकारात्मक प्रभाव और भी गम्भीर होगें जो सम्पूर्ण मानव समाज के लिए चुनौती होगा

डाटा चोरी और गोपनीयता – AI और डिजिटल युग में सबसे बडी चुनौती डाटा चोरी और गोपनीयता की समस्या को लेकर है। IAPP प्राइवेसी एंड कंज्यूमर ट्रस्ट रिपोर्ट 2023 के अनुसार वैश्विक स्तर पर 68% उपभोगता ऑनलाइन अपनी गोपनीयता के बारे में या तो कुछ हद तक या बहुत चितिंत है। अधिकांश को यह समझना मुश्किल लगता है कि उनके बारे में किस प्रकार का डेटा एकत्र किया जा रहा है और उसका उपयोग किया जा रहा है। AI का प्रसार इन चिंताओं को बढाने वाले सबसे नए कारकों में से एक है। वैश्विक स्तर पर 57% उपभोक्ता इस बात से सहमत है कि AI उनकी गोपनियता के लिए बडा खतरा हे। इसी तरह KPMG और यूनिवर्सिटी ऑफ क्वीसलैंड द्वारा 2023 में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि वैश्विक स्तर पर लगभग चार में से तीन उपभोक्ता AI के संभावित जोखिमों के बारे में चितिंत है। इस प्रकार AI से डेटा चोरी और गोपनीयता से अपराधिक गतिविधियां बढने की संभावना रहेगी। डेटा का गलत इस्तेमाल कर व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक परेशानी बढ़ने की संभावना रहती है।

रोजगार जाने का खतरा – AI द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में ऑटोमेशन हो रहा है जो परम्परागत रोजगार के लिए खतरा उत्पन्न करने वाला है। विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, ऑटोमेशन के कारण भारतीय सेवा क्षेत्र की लगभग 65% नौकरियों जाने का अनुमान हैं। अकेले भारतीय IT सेवा क्षेत्र में लगभग 6.5 लाख निम्न कुशल पद खतरे में है। आधुनिक ऑटोमेशन ब्लू और व्हाइट कॉलर जॉब्स दोनो को प्रभावित करेगा। ग्राहक सहायता और लिपिक कार्य जैसी नियमित नौकरियां सबसे अधिक प्रभावित होगी, लेकिन अन्य अर्ध–कुशल और कुशल नौकरियां भी पूरी तरह से सुरक्षित नही है। स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग सेवा, कृषि क्षेत्र में AI के द्वारा तकनीकी उन्नत स्तर पर कार्य कर रही है और इसका दायरा बढ़ने वाला भी है जिससे इन क्षेत्रो में मानव संसाधन की कम आवश्यकता होगी। इन क्षेत्रो में विशेष कुशलता के साथ AI प्रशिक्षित रोजगार ही बच पाएगे, और उसमें भी एक सॉ¶टवेयर या एक तकनीक हजारों लोगो की जगह ले लेगी। जिससे रोजगार समाप्ति के खतरे की संभावना बढ़ रहीं है।

AI से सामाजिक अलगाव को बढ़ावा – बढ़ती तकनीक के साथ सामाजिक अलगाव भी बढ़ रहा है। व्यक्ति रील्स, गेम, और अन्य तरीकों से पूर्णतः तकनीक पर निर्भर हो गया और स्क्रीन पर बहुत ज्यादा समय व्यतीत करने लगा है जिससे सामाजिक अलगाव व अकेलापन आ रहा है। राजस्थान पत्रिका के ''पत्रिका बुक'' में छपी एक खबर के अनुसार तकनीक ने इंसानी रिस्तो और भावनाओं पर गहरा असर डाला है जिसमें AI चैटबॉट के साथ बढ़ता इमोशनल अटेचमेंट को लेकर के चिंता व्यक्त की गयी । इसमें लोग चैटबॉट को एक साथी के रूप में देखते हैं और जिसकी भूमिका सलाहकार, भावनात्मक सहारे के रूप में हो गयी है। जिससे लोगो में इनके प्रति भावनात्मक अटेचमेंट बढ़ रहा है। लोग, चैटबोट से बातें कर रहे है यहाँ तक की कुछ देशो में शादी भी कर रहे है। जिससे रिस्तो पर नकारात्मक असर पड़ रहा है।

AI से मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव – AI और तकनीक के अत्यधिक उपयोग से मानसिक व शारिरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव बढ़ रहा है। खास कर बच्चे इससे ज्यादा प्रभावित हो रहे है

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

जिससे बच्चों में चिड़चिड़ापन, मानसिक कमजोरी, आखों का टेडा होना जैसे लक्षण देखने को मिल रहे है। बच्चों में वर्चुअल ऑटिज्म की स्थिति बढ रही है यह. टेलीवीजन, स्मार्टफोन, टेबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से जुड़ी एक चिंताजनक स्थिति है। जिसमें बच्चों के लगातार स्क्रीन के अत्यधिक उपयोग से उन्हें संचार संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अक्सर उनके व्यवहार में अजीबोगरीब बदलाव देखने को मिलते है। बच्चे शुरुआत में सभी अलग–अलग चीजों को छूकर, सूंघकर, चखकर, देखकर और सुनकर सीखते है ऐसे में जब वे लगातार गैजेट्स के सम्पर्क में रहते है तो वे वास्तविक दुनियां के बारे में कुछ भी नही सीख पाते है। इसकी वजह से उनका सामाजिक व भावनात्मक विकास प्रभावित होता है।

AI मानव व्यवहार को अपने तरीके से चलाता – AI मानव व्यवहार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। नई–नई तकनीक का विकास व अविष्कार मानव के जीवन को आसान बनाने के लिए होता है पर तकनीक के अत्यधिक इस्तमाल से मानव धीरे–धीरे तकनीक का गुलाम हो जाता है जिससे तकनीक मानव व्यवहार को अपने तकरीकें से संचालित करने लगती है। मानव किसी भी समस्या का समाधान तकनीक के पास ढूंढता है। जिसमें आज AI का प्रयोग अत्यधिक होने लगा है। AI द्वारा जनरेटेड जवाब जब उसे मिलता है तो मानव वास्तविकता की जांच किए बगैर उसे अन्तिम सत्य मानते हुए अपना विचार बना लेता है। अब उसके विचार स्वयं द्वारा मनन किए या खोजे गए न होकर के AI जनरेटेड है इससे मानव का व्यवहार भी उसी अनुसार ढल जाता है। आज कल AI से फेक न्यूज बनाई जाती है जिसमें विडियो, ऑडियों सब ओरिजनल जैसे लगते है और मानव उसे सत्य मानकर किसी व्यक्ति, समाज, धर्म, जाति के प्रति एक गलत दृष्टिकोण का निर्माण कर लेता है जो उसके व्यवहार को प्रभावित करता रहता है।

सामाजिक – आर्थिक अपराध को बढ़ावा– AI और तकनीक का उपयोग लोग आज अपने गलत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी करते है। लैंसेंट की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में हर 12 वां बच्चा ऑनलाइन यौन उत्पीड़न का शिकार हो रहे है। जिसमें 12.6%, सहमति के बिना तस्वीरों को शेयर करना, लेना, दिखाना, 12.5% ऑनलाइन यौन प्रलोभन, 3.5% सेक्सुएल एक्सटोर्शन, 4.7% ऑनलाइन शोषण के शिकार हो रहे है। इसके अलावा युवा डीप फेक के शिकार हो रहे है जिसमें उनकी सोशल मिडिया या कहीं से भी उनकी फोटो लेकर डीप फेक द्वारा अश्लील विडियों बना दिया जाता है जिससे उनके साथ सामाजिक–आर्थिक अपराध हो जाता है। विडियों वायरल करने की धमकी देकर पैसे मांगे जाते है या सामाजिक अपमान का सामना करना पढ़ता है। इसी के साथ डिजिटल अरेस्ट जैसी घटनाएं भी आम हो गयी है जिसे किसी व्यक्ति को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है।

AI जवाबदेही नही – AI का प्रयोग कोई किस प्रकार करे वह व्यक्ति से व्यक्ति पर निर्भर करता है पर AI तकनीक का इस्तमाल कर आप कोई भी निर्णय लेते है वह सही है या गलत उसकी जिम्मेदारी AI नहीं लेता है। AI द्वारा दिए गए सुझाव, निर्णय या किसी भी प्रकार की सलाह से व्यक्ति के जीवन में, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सास्कृतिक सहित किसी भी क्षेत्र में उसका प्रभाव सकारात्मक रहे या नकारात्मक उसके लिए AI जवाबदेह नहीं है।

सामाजिक चुनौतियों का समाधान–

AI आज के युग की आवश्यकता है और सभी देश इस हेतू प्रतिस्पर्धा कर रहे है और आगे नेतृत्वकर्ता भी वही देश होगा जिसके पास AI बेस्ड अत्याधुनिक तकनीके होगी ऐसे में AI के नकारात्मक प्रभावों को लेकर चिंता की जा सकती है, इनके समाधान के नए रास्ते खोजे जा सकते है पर AI में' अपने–आप को पीछे नहीं रख सकते. AI को अपनाना होगा और इसके साथ इससे जुड़ी समस्याओं के समाधान खोजने होगें। कुछ जरूरी समाधान जो किए जा सकते हैं–

1. जागरुकता व प्रशिक्षण – तकनीक मानव की भलाई के लिए है पर इसका गलत इस्तमाल या आम नागरिकों के साथ होने वाले अपराधों का कारण जागरूकता व प्रशिक्षण की कमी है। AI नई तकनीक है. जिसके उपयोग को लेकर सरकार को आम जनता को जागरूक व प्रशिक्षित करना चाहिए।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

2. डाटा व गोपनीयता की सुरक्षा – AI के इस्तमाल में सबसे बड़ी चुनौती ही डाटा चोरी और गोपनीयता को लेकर है। अतः वैश्विक स्तर पर व भारत सरकार द्वारा भी इससे सम्बधित कानून बनाने व कम्पनीयो को पाबंद करने सम्बन्धी नियम होने चाहिए जिससे डाटा सुरक्षित हो सके। जैसा की हाल ही में भारत सरकार के वित मंत्रालय ने डाटा सुरक्षा को लेकर के कहा की सरकारी कर्मचारियों को ChatGPT, Deepseek जैसे AI टूल्स का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

3. AI के नैतिक उपयोग हो– यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए की AI का प्रयोग किसी का अहित करने की बजाए नैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतू इसका प्रयोग किया जाए।

4. नए रोजगार का सृजन – AI औटोमेशन से कई नौकरियों के जाने का खतरा है। सरकार राष्ट्रीय स्तर पर AI में निवेश को बढाएं और नए रोजगारों हेतु प्रशिक्षण संस्थान खोलकर, प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

5. सूचना की पारदर्शिता – AI सिस्टम एक तरीके से ब्लैक बॉक्स' होते है। उसके निर्णय को समझना आसान नहीं है जिससे कि उस पर पूर्णतः विश्वास नहीं किया जा सकता। ऐसे मे ऐसा सिस्टम विकसित करना चाहिए बिसमें सूचना पारदर्शी हो, उपयोगकर्ता को उसके उपयोग को लेकर जोखिमों व लाभ' का पता हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रो. कृष्णगोपाल शर्मा, डॉ. हुकमचन्द जैन,भारत का राजनीतिक एवं' सांस्कृतिक इतिहास, भाग–प्रथम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ.सं. 38, 39,40
2. प्रो. घनश्याम धर त्रिपाठी, भारतीय सामाजिक व्यवस्था आस्था प्रकाशन, पृ.सं. 10,11,12
3. उत्पल चक्रबोती, रोहित शर्मा (2020) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस BPB प्रकाशन, पृ.सं. 86,87,67,100,138
4. iapp.org (International Association of Privacy Profession)
5. विकिपिडिया
6. राजस्थान पत्रिका (23 जनवरी 2025)– द लेसेंट रिपोर्ट
7. राजस्थान पत्रिका (23 जनवरी 2025) – AI के साइड इफेक्ट